प्रातः क्लास 29-11-68 ओमशान्ति पिताश्री शिव बाबा याद है?

ओमशान्ति। रूहानी बाप बैठ रूहानी बच्चों को समझाते हैं। समझा समझा समझाकर कितना समझदार बना देते हैं। पढ़ाई भी समझ है ना। बच्चे तो कुछ भी नहीं जानते हैं। वह है स्थूल पढ़ाई यह है सूक्ष्म पढ़ाई। बच्चे जानते हैं यह पढ़ाई और कोई नहीं पढ़ा सकते। बाप आये ही हैं पवित्र बनाने और पढ़ाने। एमआबजेक्ट सामने खड़ी है। तो बाप को याद कर खुश भी होना चाहिए। यह भी बच्चे जानते हैं दिन प्रति दिन हमको शान्ति में ही जाना है। शान्ति तो सभी को पसन्द आती है। बड़े आदमी जल्दी नहीं बोलते हैं। और न जोर से बोलते हैं। तुम बहुत2 बड़े आदमी बनते हो। वास्तव में तुमको आदमी भी नहीं कहेंगे। तुम देवता बनते हो देवताओं का बोलना बहुत थोड़ा होता है। तुमको भी अभी देवता बनना है तो टाकी से बदल सायलेन्स में रहना है। शान्ति में रहने वाले के लिये समझेंगे इनको अपने ऊपर अटेन्शन है। जब कि तुमको शान्तिधाम में जाना है तो बोलना भी बहुत आहिस्ते हैं। आहिस्ते बोलते2 शान्तिधाम चले जाना है। जितना तुम शान्ति में रहते होउतना ही शान्ति फैलाते हो। तुमको बहुत शान्ति में रहना चाहिए। आवाज़ से बात करना अच्छा नहीं लगता। क्रोध भी अच्छा नहीं है। कोई भी विकार न रहना चाहिए। देखना चाहिए हम कोई से लड़ते झगड़ते तो नहीं हैं। बाप ने समझाया है हियर नो ईवील। ऐसी बातों से किनारा कर देना चाहिए। तो दोनो का मुख बन्द रहेगा। हर बात में दैवी गुणों को धारण करना है। कोई आवाज करे बोलो शान्त। आवाज मत करो। सतयुग में शान्ति रहती है ना। मूलवतन में तो है ही शान्ति। शरीर ही नहीं तो फिर बोलेंगे कैसे। यह बातें तकदीरवान ही धारण कर सकते हैं। फूटी तकदीर वाले न सुनते हैं न अमल करते हैं। जो अमल करते हैं श्रीमत पर चलते हैं उनकी ही ऊंच तकदीर बनती है। बाप मत तो बहुत अच्छी देते हैं। समझाते हैं अपने घर जाना है। टाकी से डूबी में आना है। तो फिर सायलेन्स में चले जावेंगे। जो भी मिले उनको यही पैगाम देना है। यह दुनिया तो है ही जंगली जानवर। जानवर कहें अथवा बन्दर कहें। तो जितना सायलेन्स में रहेंगे उतना ही समझेंगे यह योग की धून में हैं। शान्ति का स्वभाव अच्छा है। वह बड़े ही मीठे लगते हैं। जाना भी है शान्तिधाम। जानते हैं योगबल से पवित्र भी बनना है। माया भी बहुत वार करती है। बलवान से ही लड़ती है। गीत भी है ना। माया कितना गुप्त दुश्मन है। बड़ा भारी दुश्मन है। बड़ी बलवान है माया। बच्चों को फीलिंग आती है बरोबर माया का वार होता है। यह 5 भूत है ना। देह अभिमान का सबसे कड़ा भूत है। मनुष्य तो बिल्कुल ही पत्थर बुद्धि हैं। तुमको भी अभी बाप समझाते हैं तब फीलिंग आती है। बरोबर हम पारस बुद्धि से पत्थर बुद्धि बने हैं। फिर बाप पारस बुद्धि बनाते हैं। यह कोई शास्त्रों की नालेज नहीं। ऐसे भी नहीं यह कोई शास्त्र पढ़ा हुआ है। भल गीता पढ़ते थे। परन्तु शास्त्रों में तो कुछ भी है नहीं। वह है ही भक्ति मार्ग। यह भी ड्रामा का चक्र फिरना जरूर है। ड्रामा पास होता जाता है। कहानियां बनाते हैं ना लांग लांग एगो क्या हुआ था। बाप बच्चों को मीठी कहानियां बैठ सुनाते हैं। थोड़ी सी बेहद की कहानी है। बाप बैठ समझाते है 5000 वर्ष पहले इनका राज्य था। यह अक्षर कब कोई सन्यासी आदि नहीं बतावेंगे। वह जानते ही नहीं। यह है नई दुनिया के नई कहानी। जो तुमको सुनाई जाती है। यह है शास्त्रों के विरुद्ध। शास्त्रों में तो लिख दिया है भितर ठिक्कर में परमात्मा है। जानवरों मिसल बकते रहते हैं। रात दिन का फर्क है ज्ञान और अज्ञान में। भक्ति अज्ञान को कहा जाता है। ज्ञान का सागर तो एक ही बाप है। उसने ही ज्ञान सुनाकर पूरानी सृष्टि को पलटाया है। यह अन्दर में चलना चाहिए। बाप को याद करने से ही बेड़ा पार हो जाता है। ऐसे नहीं कि साधु सन्त आदि को याद करने से बेड़ा पार होता है। वह बिचारे तो कुछ भी नहीं जानते। उन पर भी तरस पड़ता है ना। बाप को कहा ही जाता है रहमदिल। कितना अच्छी रीत पढ़ाते हैं। कहते हैं कल्प कल्प अनेक बार तुमको पढ़ाकर गया हूं। जो ऐसा है वैसा विरला ही कोई जानता है। बाप भी रूह बतलाते हैं मैं इनका आधार लेता हूं। मैं आत्मा ही हूं पत्थर बुद्धि को पारस बुद्धि बनाने। सभी पत्थर बुद्धि हैं। चित्रों को देखकर समझने की कोशिश नहीं करते हैं।

प्रश्ना को देखकर हो.... बोलो भगवान तो निराकार है, यह तो बहुत जन्मों के अन्त के जन्म में पिछाड़ी में खड़ा है। अभी फिर पारस बुधि बन रहे हैं। तुम बच्चों के सामने एनआबजेक्ट खड़ी है। यह ज्ञान है ही बहुत शांन्ति का। इसमें कोई वेद शास्त्र आदि पढ़ने का नहीं है। सतयुग में न तो भक्ति है, न संगमयुगी ज्ञान रहता है। तुमको वरसा मिल जाता है। फिर तुम बहुत अच्छी रीत राज्य करते हो। ताकत रहती है। कोई लश्कर आदि की बात ही नहीं। कोई बोम्ब आदि की बात नहीं। कोई डर की बात नहीं। यहां कितना डर रहता है। राजाओं का भी ड्रामा अनुसार देखो क्या हाल हुआ है। अभी तुम समझते हो हम ही सो पूज्यपावन थे फिर हम ही पतित पूजारी बने हैं। जो भी मिले उनको यह समझाना चाहिए। अभी आत्माओं के बाप को याद करो। मौत आ रहा है। यह पुरानी दुनिया बदलनी है। तो कुछ न कुछ असर पड़ता रहेगा। तुम पैगम्बर हो ना। सभी के ऊपर तुम्हारी मेहर होनी चाहिए। मेहर करने वाले बाप की याद में बड़ा ही शांत में रहेंगे। सिर्फ पैगाम देना है बेहद के बाप को याद करो तो बेहद का सुख शान्ति मिलेगा। लौकिक बाप पास बहुत धन है तो बहुत वरसा मिलेगा ना। बेहद के बाप के पास तो है ही विश्व की बादशाही। हर 5000 वर्ष बाद विश्व की बादशाही मिलती है। बच्चों में बड़ी रायलिटी चाहिए। फालतू बोलने से न बोलना बहुत अच्छा है। बहुत शांति में काम करना पड़ता है। बच्चों को बहुत मीठा हो चलना है। ज्ञान न है तो उनमें 5भूत रहते हैं। उनमें सभी किचड़ा है। भक्ति तो बिल्कुल जैसे किचड़ा है। ज्ञान है कस्तुरी। सतयुग में कितनी नेचरल खुशबूयें रहती हैं। सो बच्चों को खुशी होनी चाहिए। हम बाप के पास बैठे हैं। बाप कल्प2 ऐसे ही पढ़ाते हैं। यह ड्रामा चलता रहता है। जो पास हुआ वह फिर रिपीट जरूर होगा। चेंज नहीं हो सकती। तो इस समय बाप को याद करो तो पाप कट जायें। बच्चों को सा० आदि तो बहुत हुये परन्तु सा० से कोई फायदा नहीं। वह तो है सिर्फ एनआबजेक्ट। दैवीगुण भी धारण करनी है। ऐसा(ल०ना०) बनना है। बच्चों को समझाते तो बहुत अच्छा हैं। परन्तु पत्थर बुधि है, कुछ भी बुधि में बैठता ही नहीं। बाप कहते हैं याद से ही पाप कटेंगे। और तुम स्वर्ग में चले जावेंगे। यह भी किसको सुनावेंगे तो वह खुश होगा। नौकरों आदि को भी यह शिक्षा देनी चाहिए कि बेहद के बाप को याद करो तो बेड़ा पार है। तुम पावन बन जावेंगे। तुम बच्चे जानते हो हम अनेक बार ऐसे पतित से पावन, पावन से पतित बने हैं। दुनिया में मनुष्यों को तो यह भी मालूम है नहीं। इसलिये कोशिश की जाती है बड़े2 आदमियों को समझाने की। कुछ तो पैगाम सुने। सेकण्ड में जीवनमुक्ति गायन है ना। जीवनमुक्ति तो राजा की भी तो प्रजा की भी है। बाकी पुरुषार्थ से नम्बरवार पद होते हैं। प्राईम मिनिस्टर भी पुरुषार्थ से ही बनते हैं। पौलिटिकल बातों में अच्छी रीत आते हैं। तुम्हारे इसमें भी लिखा हुआ है रिलीजयो पौलिटिकल। वह है जिस्मानी। तुम हो रूहानी। राजधानी की स्थापना तो होनी ही है। तुम गुप्त के मैदान में हो। परन्तु इनकामनिटी पौलिटिकल हो। बाप से विश्व की बादशाही पाते हो। तुम्हारा यह राजयोग मशहूर है। बाकी तो सभी हैं हठयोग। उन्हों की किताब आदि देखो तो बन्डर लगता है। उन्हों का भी अपना धंधा है। बहुत फालोअर्स हैं। उनका छोड़ना ही मुश्किल है। उन्हों की जैसी राजाई है। सो अपनी राजाई ऐसे थोड़े ही छोड़ेंगे। समय पर अनायास ही यह सभी खत्म हो जावेगा। सारी दुनिया कैसे खत्म होगी वह भी देखेंगे। योगबल से अपनी आयु भी बढ़ाते जाते हैं। बाप ने बताया था इनकी आयु 150 वर्ष होगी। कांची में आयु देखने वाले आते थे। सभी कहते थे इनकी आयु 75 वर्ष है। अगर बढ़े तो बहुत बढ़ जावेगी। योगबल से आयु कितनी बड़ी हो जाती है। वहां तो अकाले मृत्यु किसकी होती ही नहीं। गरीब और साहुकार के पद में तो फर्क है ना। गरीब अच्छी रीत पुरुषार्थ करते हैं साहुकार बनने का। तो अभी पुरुषार्थ करना चाहिए। अपना कल्याण करना चाहिए। यज्ञ की बहुत रूची से सर्विस करनी चाहिए। बहुत रूची से काम किया जाता है। सेवा का लायक भी बनना है। कहते भी हैं मिठरा घूर न घूरायं। जो खुद ही डरते रहेंगे उनकी कोई सेवा क्या करेंगे। किसको दिल होगी। जो यज्ञ की बहुत सेवा करते हैं उनकी सेवा की जाती है।

बाकी जो डिससर्विस करते हैं, सेवा का अंश बिल्कुल ही नहीं उनको सेवा करने किसको दिल होगी? यह भी बुधि होनी चाहिए, पहचान होनी चाहिए बाबा के यज्ञ में सर्विस एकुल कौन है। फूल को देखने से ही फूल बनेंगे। कांटों का तो संग ही बिल्कुल छोड़ देना चाहिए। तुम भी कांटे बन जावेंगे। संग तारे कुसंग बोरे। बाबा हमेशा कहते हैं फूल बनना है तो फूलों का संग करो। कांटों का संग कांटा ही करते हैं। संग उनका करना चाहिए जो घड़ी2 कहते रहते शिव बाबा को याद करो। यहां ही संग तरना और बोरना भी है। कांटे भर बुई झंगबुई की बातें, किसकी अवगुण ही बकते रहेंगे। यह भी समझ होनी चाहिए कि संग किसका करें। हमेशा संग फूलों का करना है। यही एक दो को याद दिलाओ। शिव बाबा याद है? इसमें खुशी भी होती है। याद दिलाने वाले कोयेंस देना चाहिए। पतित-पावन शिव बाबा को याद करो तो तुम तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जावेंगे। बहुत कोशिश करनी चाहिए। परन्तु माया भी बड़ी प्रबल है। तुम बच्चे महारथी हो। यह भी महारथी है ना। शिव बाबा कहते हैं जो भी महारथी हैं उन पर ही माया की नजर है गिराने की। पहलवानों से माया पहलवान ही लड़ती है। गरीब से गरीब होकर लड़ती है। माया की बड़ी चोट आनी पड़ती है। दीवा बुझाने देरी नहीं करती। 8-10 वर्ष बाद भी फिर काम से हार खा लेते हैं। इतना काम बलवान है। देह अभिमान में आने से उट विकार मुंह दिखाने आवेंगे। हाथ भलाई का खेल भी यहां का है। तुम समझते हो बाप द्वारा हम इतना धनवान बनते हैं। तो ऐसे बाप को याद करना चाहिए ना। कोई भी आवे पहले2 पैगाम ही यह दो। शिव बाबा कहते हैं मुझे याद करो। गीता में भी कुछ अक्षर हैं। मन्मनाभव। यह महामंत्र है। अर्थात माया को वश करने का महामंत्र है। सारी प्रकृति यहां तुम्हारा दासी बन जाती है तो यह बातें भूलनी न है। काम काज करते शिव बाबा को याद करना है। शिव बाबा को किसके पैसे की दरकार नहीं। वह तो मनुष्यों को ख्याल होगा पैसे इकट्ठे करने का। यह तो बेहद का यज्ञ रचा जाता है। आपही बच्चे चलाते रहते हैं। यहां से तो कोई को कुछ ले नहीं जाना है। अचानक ही सभी के पैसे मिट्टी में मिल जावेंगे। दिवाला निकल जावेगा। इसलिए सभी कुछ दूसरे करना है। नहीं तो मिट्टी में मिल जावेगा। शिव बाबा ऐसे नहीं कहते कि मुझे दो। शिव बाबा तो दाता है ना। ऐसे मत कोई समझे हमने दिया। नहीं। यह बड़ी गुह्य समझने की बातें हैं। दिल में आना चाहिए हम तो 21 जन्मों लिये ले रहे हैं। भक्ति मार्ग में भी बहुत दान पुण्य आदि करते हैं। समझते हैं हम ईश्वर अर्थ करते हैं। दूसरे जन्म में ढेर मिलेगा। यह है इन डायरेक्ट। यह है डायरेक्ट। यह सभी बातें बाप बैठ समझाते हैं। जो कुछ लेते हैं तुम्हारे ही सर्विस में लगाने लिये। तुम गुल2 बन जावेंगे फिर पैसा क्या करेंगे। बाप कहते हैं गरीबों को बहुत साहुकार बनाता हूं। जो अभी साहुकार है वह पीछे जागेंगे। फिर उनका कुछ भी हैंगे ही नहीं। कहेंगे अच्छा रखो। कपड़े पर चित्र भी बन जावेंगे। अभी देरी है ना। बाहर वालों में से कोई अच्छा जाग जाये तो भारत में भी आवाज हो। सभी कहेंगे यह साकुमारियां ऐसी नालेज देती हैं जिससे स्वर्ग का मालिक बनते हैं। यह (ल0ना0) मालिक हैं ना। जब तुम दिखावेंगे तब समझेंगे पेराडाईज इनको कहा जाता है। परन्तु पिछाड़ी में पुरुषार्थ करने का टाईम नहीं मिलेगा। तुम बच्चों को अन्दर में बहुत खुशी होनी चाहिए। हम शिव बाबा की सर्विस में उपस्थित हैं। शिव बाबा को याद करने से ही हमारे पाप कट जावेंगे। यह भी गायन है सावनशाह की हुण्डी भरी। हुण्डी भरने वाला तो बैठा है ना। ड्रामा में नूंध है। कल्प कल्प भी हुण्डी भरी थी। जिससे हेवन स्थापन हुआ था। अभी भी हो रहा है। कोई ख्याल नहीं रहता। पाई2 कल्प पहले मिसल देते रहते हैं। देते नहीं यह तो लेते हैं। 21 जन्मों लिये नशा हो जाता है। फिर 21 जन्म खा पीकर खलास कर देंगे। भक्ति मार्ग में कितना उल्टा सुल्टा खर्चा आदि करते आये हो। अच्छा बच्चों को बाप दादा का याद प्यार गुड मार्निंग और नमस्ते।